दीनदयाल जी ने राश्ट्र की एकता, अखंडता, मर्यादा और आन–बान को उजागर करता एक उपन्यास 'सम्राटचंद्रगुप्त' लिखा। इसकी भूमिका में उन्होंने कहा–